Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Volume - 5, Issue - 11, November - 2022 Publication Date: 25/11/2022

DOIs:10.2018/SS/202211007 --:-- Research Article

मानव भूगोल का विषय क्षेत्र

Dr. Aditi C. Ashiya

Assistant Professor, Geography Department, L.D. Arts College, Navrangpura, Ahmedabad, Gujarat

Email - aditi198725@gmail.com

सारांश (Abstract) : भूगोल एक ऐसा विषय है जिसमें कला एवं विज्ञान दोनों ही सम्मिलित हैं। विज्ञान के रूप में भूगोल एक ऐसा विशेष विषय है जिसमें पृथ्वी तल का अध्ययन किया जाता है। 'कहां' शब्द की व्याख्या करना भूगोल का परम उद्देश्य है। पृथ्वी तल पर क्षेत्र का अध्ययन करने वाले विज्ञानों को तीन भागों में बांटा जा सकता है - (१) खगोल (२) भूगोल (३)भूगर्भ शास्त्र।

खगोल विज्ञान में अंतरिक्ष के पिंडो का मानव पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। पृथ्वी सतह पर प्राकृतिक और मानवीय तथ्यों के वितरण का अध्ययन भूगोल के अंतर्गत किया जाता है। भूगर्भ शास्त्र में पृथ्वी के भूगर्भ का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि वह एक भू विस्तारीय और भू वितरण विज्ञान है।

मुख्य शब्द (key words) : भूगोल, भू-विस्तार, भू-वितरण।

1.प्रस्तावना (Introduction) : 19वीं शताब्दी के पहले भूगोल में भौतिक भूगोल और मानव भूगोल जैसा कोई विभाजन नहीं था। सामान्य भूगोल में प्राकृतिक तथ्यों के साथ मानवीय तथ्यों का भी अध्ययन किया जाता था। वर्तमान में भूगोल एक विशिष्ट विज्ञान है जो पृथ्वी तल के निरंतर हो रहे परिवर्तनशील स्वरूप का वैज्ञानिक और क्रमबद अध्ययन करता है। भूगोल में भूतल का अध्ययन इसलिए किया जाता है क्योंकि यहां मानव का निवास है। भौगोलिक अध्ययन उन्हीं तथ्यों तक सीमित होता है जिनका संबंध किसी न किसी रूप में मनुष्य से है। फ्रेडरिक रैटजेल को भूगोल में मानव केंद्रित विचारधारा को स्थापित करने का श्रेय जाता है। यह अपने ग्रंथ एंथ्रोपॉजियोग्राफी के कारण विश्व भर में विख्यात हो गए और इसी कारण रैटजेल को मानव भूगोल का पिता कहा जाता है। इनके अनुसार मानव भूगोल मानव समाज एवं पृथ्वी सतह के बीच संबंधों का विशिष्ट अध्ययन करता है।

2. उद्देश्य (Objectives)-

i. भूगोल में मानव भूगोल का स्थान क्या है।

ii. मानव भूगोल का वास्तविक विषय क्षेत्र।

3. विधितंत्र (Methodology)- यह पेपर आंकड़ों के द्वितीयक स्रोत पर आधारित है, जिसमें मुख्यतः मानव भूगोल की पुस्तके सम्मिलित हैं। नवीनतम सूचनाओं और जानकारियों के लिए इंटरनेट का भी प्रयोग किया गया है।

4. मानव भूगोल का विषय क्षेत्र (Scope of human geography) - मानव भूगोल एक ऐसा विज्ञान है जिसमें पृथ्वी सतह के अलग-अलग भागों में निवास करने वाले मानव समूहों तथा उनके वातावरण के बीच होने वाले अंतक्रियाओं और उनसे उत्पन्न भू दृश्यों का अध्ययन किया जाता है।

मानव भूगोल, भूगोल विषय के भाग स्वरूप में एक प्रगतिशील विज्ञान है। सर्वप्रथम रैटजेल ने भूगोल के क्षेत्र में भौतिक भूगोल से पृथक भौगोलिक अध्ययन के मानवीय पक्ष को प्रस्तुत किया और एक अलग विज्ञान के रूप में मानव भूगोल को स्थापित किया। मानव भूगोल के विकास के पहले मानव और उससे संबंधित पक्षों का अभ्यास सामान्य भूगोल के अंतर्गत ही किया जाता था।

निश्चयवाद जर्मन भूगोलवेत्ता इस बात पर विशेष बल देते थे कि पर्यावरण के साथ रहकर मनुष्य कैसे अपने आप को पर्यावरण के साथ अनुकूलन कर लेता है और अपनी जरूरतों की पूर्ति करता है।

एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में बीसवीं शताब्दी में फ्रांस के भूगोलवेताओ द्वारा मानव भूगोल का विकास होगा। फ्रांसीसी भूगोलवेताओ ने मानव और उसके कार्यों के अध्ययन को प्रमुखता प्रदान की। इसके बाद अमेरिका, ब्रिटेन, रूस और अन्य यूरोपीय देशों में भी मानव भूगोल का विकास हुआ और जिससे इसे एक नई दिशा प्राप्त हुई। मानव भूगोल में मुख्यतः मानव समाज, उनकी संस्कृति,उनके द्वारा रचित मानवीय वातावरण जैसे-पशुपालन,कृषि,खनन औधौगिकरण यातायात के साधन, वैश्वीकरण,अर्थव्यवस्था जैसे तथ्यों का अध्ययन किया जाता है।

पिछले कुछ दशकों में मानव भूगोल के क्षेत्र में निरंतर विस्तार हो रहा है और इससे तीव्र गति से परिवर्तन भी देखने को मिल रहा है। नवीन वैश्विक समस्याओं और चुनौतियों का अध्ययन करने के लिए मानव भूगोल की अनेक नई शाखाओं का विकास हुआ है। वैश्विक राजनीतिक परिस्थितियों में हो रहे निरंतर परिवर्तन, सामाजिक औचित्य,नगरीकरण एवं नगरीय संरचना, औद्योगिकरण, वैश्वीकरण लोगों का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक सुविधाएं, लैंगिक असमानता आदि ऐसी ही चुनौतियां और समस्याएं हैं। इन सारी समस्याओं का हल ढूंढने के लिए मानव भूगोल में अध्ययन के कई नई विधियां भी विकसित हुई है।

भूगोल विषय की तरह मानव भूगोल तीन कार्यों को संपन्न करता है(१) पृथ्वी सतह पर मानव द्वारा की जाने वाली घटनाओं का स्थिति संबंधी विश्लेषण करना। इन विशेषताओं को प्रभावशाली ढंग से मानचित्र द्वारा प्रदर्शित करते हैं। उन कारकों का वर्णन किया जाता है जिनसे निश्चित क्षेत्र प्रतिरूप बनते हैं। अधिक महत्वपूर्ण तथा उच्च दक्षता वाले वैकल्पिक क्षेत्रिय प्रतिरूपो को प्रस्तावित किया जाता है। यहां क्षेत्रों के बीच स्थानिक विभिन्नता को बल दिया जाता है। तत्वों के बीच स्थानिक विभिन्नता को बोल दिया जाता है। तत्वों के बीच में संबंधों को दो प्रकार से देखा जा सकता है। मानव का क्षेत्र पर प्रभाव और पर्यावरण का मनुष्य पर प्रभाव।

(२) पारिस्थितिक विश्लेषण, जिसमें एक भौगोलिक प्रदेश के अंदर मानव और वातावरण के संबंधों के अध्ययन को प्राथमिकता दी जाती है।

(३) प्रादेशिक संश्लेषण, जिसमें स्थानीय एवं पारिस्थितिकी उपागमो को एक साथ मिला दिया जाता है। क्षेत्रों की पहचान कर ली जाती है।

मानव भूगोल में मानव को अध्ययन और विश्लेषण का आधार बनाया जाता है और निम्न प्रश्नों का उत्तर ढूंढने का प्रयास किया जाता है- (1) वे कहां है?

(2) वे वहीं पर क्यों है?

(3) क्या वे आपस में एक जैसे हैं ?

(4) वे क्षेत्र में कैसे अंतरक्रिया करते हैं।

(5) वे अपने प्राकृतिक परिवेश में किस प्रकार के सांस्कृतिक भू दृश्य की रचना करते हैं?

इनके अतिरिक्त मानव भूगोल, हमारे लिए,हमारी संतानों के लिए और भावी पीढ़ी के लिए भी अध्ययन करता है। इन सभी का अध्ययन करने के लिए भूगोलवेता को आधारभूत विधियों का प्रयोग करना होता है।

भूगोल की मुख्य शाखा के रूप में मानव भूगोल मानवीय तत्वों का अध्ययन करता है। मानव तथा पर्यावरण के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन मानव भूगोल के अध्ययन का केंद्र बिंदु है, अर्थात मानव भूगोल में पर्यावरण से संबंधित मानव समाज के अध्ययन पर विशेष बल दिया जाता है। वास्तव में, मानव भूगोल का कार्यक्षेत्र बहुत ही विस्तृत है। इसके अंतर्गत मानव प्रजातियों, विश्व के विभिन्न भागों में जनसंख्या का वितरण,घनत्व, विकास वृद्धि, जनसांख्यिकी लक्षण, जन स्थानांतरण आदि संबंधों में ज्ञान प्राप्त किया जाता है। इसके साथ ही मानव समूहों की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। मानव भूगोल में ग्रामीण बस्तियों के प्रकार एवं प्रतिमान और नगरीय बस्तियों के स्थल विकास और कार्य तथा नगरों के कार्यात्मक वर्गीकरण का भी अध्ययन किया जाता है। इसमें उद्योग धंधे, परिवहन एवं संचार व्यवस्था तथा व्यापार आदि आर्थिक क्रियाओं का विकास तथा उसके क्षेत्रिय वितरण का भी अध्ययन किया जाता है।

मानव भूगोल कि विषय वस्तु सभी सामाजिक विज्ञानों का एकीकरण करती है क्योंकि यह उन विज्ञानों का एकीकरण करती है जो क्षेत्रीय एवं क्रमबद्धता का दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जिनका उनमें अभाव होता है। इसके साथ ही मानव भूगोल अपने विषय सामग्री के विश्लेषण हेतु अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध स्थापित करता है। इस प्रक्रिया में मानव भूगोल अन्य सामाजिक विज्ञानों से सहायता लेता है और उन्हें सहायता प्रदान भी करता है। उदाहरणतया वह जनसंख्या के अध्ययन के लिए जनसांख्यिकी, आर्थिक भूगोल के लिए अर्थशास्त्र, कृषि भूगोल के लिए कृषि विज्ञान, नगरीय भूगोल के लिए नगरीय समाज विज्ञान, राजनीतिक भूगोल के लिए राजनीति विज्ञान, सामाजिक भूगोल के लिए समाजशास्त्र तथा इतिहास पर निर्भर रहता है। बदले में मानव भूगोल इन विज्ञानों को क्षेत्रीय एवं क्रमबद्धता के दृष्टिकोण से अवगत कराता है। इस प्रकार मानव भूगोल वास्तविक रूप में उदार शिक्षा का उद्देश्य पूरा करता है।

5. निष्कर्ष (Conclusion): मानव भूगोल में हमें आज के अशांत, तनावग्रस्त एवं प्रतिस्पर्धात्मक विश्व में सामाजिक वास्तविकता से अवगत कराता है और यथासंभव आधुनिक विश्व में मानवीय समस्याओं का हल ढूंढने में हमारी सहायता करता है। संक्षेप में मानव भूगोल हमें उत्कृष्ट जानकारी उपलब्ध कराता है और अच्छे नागरिक बनने में हमारी सहायता करता है।

References:

1. मौर्य एस.डी. (2009) मानव भूगोल, P. 5,6,7,8 शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, भारत

2. हुसैन माजिद (2007) मानव भूगोल, P. 12 रावत पब्लिकेशंस, जयपुर, भारत

Websites

. http://jncollegeonline.co.in

. http://getuplearn.com

. http://dhingcollegeonline.co.in